B A Part I (H)
Paper II

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College RajNagar

आत्महत्या का सिद्धान्त (Theory of Suicide, दुर्खीम) -

इमाइल दुर्खीम ने अपने पुस्तक Le suicide में आत्महत्या के सिद्धान्त की व्याख्या की है। इमाइल दुर्खीम ने स्पष्ट किया कि आत्महत्या की किसी व्यक्तिगत कारण का परिणाम न होकर सामाजिक तथ्य है। व्यक्ति तथा समाज के संबंधों की विवेचना दुर्खीम 'व्यक्तियों' को ऐसे प्राणियों के रूप में पाते हैं जिनकी इच्छाएं असीमित होती हैं। मानव अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद भी संतुष्ट नहीं होता। मानव की इच्छाओं पर नियंत्रण समाज द्वारा ही होता है। समाज एक नियामक शक्ति का निर्माण करता है। समाज के साथ उसका सम्बन्ध या नियंत्रण प्रभावी नहीं होता तो वह आत्महत्या की ओर बढ़ता है। अतः आत्महत्या एक सामाजिक तथ्य है।

दुर्खीम ने जलवायु, भौतिक, मनोवैज्ञानिक एवं अन्य कारणों को नकारते हुए केवल सामाजिक कारण को आत्महत्या के लिए उत्तरदायी माना है।

दर्खीइम ने आत्महत्या को स्पष्ट करते हुए लिखा है," आत्महत्या वह होती है जिसमें व्यक्ति सकारात्मक या नकारात्मक रूप से ऐसा काम करता है जिसका परिणाम प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वह जानता है, उसके शरीर के नष्ट होने में है।"

दर्खीइम के आत्महत्या के समाजशास्त्रीय सिद्धांत के लक्षण -

① समाज में जितना अधिक धार्मिक एकीकरण होगा उतना ही आत्महत्या की दर कम होगी।

② समाज में जितना अधिक स्थानीय या घरेलू एकीकरण होगा, आत्महत्या की दर उतनी ही कम होगी।

③ समाज में जितना अधिक राजनैतिक एकीकरण होगा, उतना ही आत्महत्या की दर कम होगी।

④ आत्महत्या तथा एकीकरण और सुदृढ़ता में विपरीत सम्बन्ध है।

दर्खीइम ने आत्महत्या के सम्बन्ध में कुछ निष्कर्ष दिये है जो इस प्रकार है —

① किसी भी सामान्य समाज में आत्महत्या की मनोवैज्ञानिक और मनोव्यावैकल्प कारकों के संदर्भ में सम्पक व्याख्या सम्भव नहीं है।

② आत्महत्या की व्याख्या आनुवांशिकता और पर्यावरण के कारकों द्वारा भी नहीं की जा सकती,

③ आत्महत्या की व्याख्या अनुकरण द्वारा भी होना सम्भव नहीं है।

④ आत्महत्या निश्चित रूप से एक सामाजिक घटना है और इसलिये इसके कारणों की खोज समाज में ही होनी चाहिये। सामाजिक पर्यावरण द्वारा ही आत्महत्या की समुचित व्याख्या सम्भव है। दर्खाइम के अनुसार आत्महत्या की व्याख्या सामाजिक कारकों जैसे सा० सुदृढ़ता, सामूहिक चेतना, सामूहिक प्रतिनिधान और मानकहीनता के संदर्भ में की जानी चाहिये।

आत्महत्या के प्रकार :- दर्खाइम ने आत्महत्या के आँकड़ों को संख्यकीय विश्लेषण द्वारा स्पष्ट किया। आँकड़ों के आधार पर आत्महत्या के तीन प्रकारों को बताया है। जो इस प्रकार हैं:-

① अहंवादी आत्महत्या (Egoistic suicide) :- यह आत्महत्या एक ऐसी सामाजिक स्थिति का परिणाम है जिसमें समूह के नियंत्रण में बहुत कमी हो जाने के कारण व्यक्ति और समूह का पारस्परिक संबंध इतना ढीला और कमजोर हो जाता है कि व्यक्ति अपने आपको न केवल उपेक्षित ही नहीं बल्कि समाज

-से व्यक्ति अलग-थलग समझने लगता है तथा आत्महत्या की ओर प्रेरित होता है। सामाजिक घनिष्ठता में कमी, सम्बन्धों में औपचारिकता तथा सामाजिक नियंत्रण में होने वाली कमी, अहंवादी आत्महत्या के प्रमुख कारण है।

② परार्थवादी आत्महत्या (Altruistic suicide) ÷

यह आत्महत्या व्यक्ति द्वारा स्वयं को सामाजिक समूह के साथ अतिमिलन या एकीकृत के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होती है। दुर्खीम के अनुसार परार्थवादी आत्महत्या पूर्व आधुनिक समाजों की विशेषता है जो समूहवाद के गुण से परिपूर्ण होती है। व्यक्ति, पूर्णत: सामूहिकता के अधीन है। सशक्त सामूहिकताएं व्यक्ति को भरपूर सामाजिक लगाव की भावना प्रदान करती है। समूह की आवश्यकताएं तथा समूह के मूल्य हमेशा व्यक्ति की आवश्यकताओं एवं मांग के ऊपर प्राथमिकता प्राप्त करते है। इस प्रकार के आत्महत्या में व्यक्ति समूह के हितों के लिए स्वेच्छा से बलिदान कर देता है।

③ प्रतिमानहीनतामूलक आत्महत्या (Anomic suicide) :-

आत्महत्या का तीसरा प्रकार प्रतिमानहीनतामूलक आत्महत्या है। सामाजिक जीवन में अत्यधिक विभेदीकरण, विशेषीकरण तथा श्रम विभाजन के कारण जैसे ही सुदृढ़ता की स्थिति में अपेक्षित सामाजिकता, सामूहिक चेतना और प्रकार्यात्मक निरंतरता की क्षमता का अभाव हो जाता है। व्यक्ति इन परिस्थितियों में समाज से अलग-थलग पड़ जाता है। दुर्खीम इसे प्रतिमानहीनता की स्थिति कहते हैं। समाज से दूर होने की परिस्थिति में किया गया आत्महत्या प्रतिमानहीनता-मूलक आत्महत्या है।

आलोचनात्मक मूल्यांकन (Critical evaluation) :-

दुर्खीम द्वारा आत्महत्या का अध्ययन, उनके समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण को प्रामाणिक महत्व प्रदान करता है। दुर्खीम के अध्ययन की विषयवस्तु सामाजिक तथ्य है। आत्महत्या को एक सामाजिक तथ्य के रूप में सही ढंग से परिभाषित किया गया और वैयक्तिक आत्महत्या के स्थान पर आत्महत्या की दर को समाजशास्त्रीय अध्ययन की विषयवस्तु माना। दुर्खीम के अध्ययन की आलोचना इस आधार पर होती है कि उसने सामाजिक कारकों को प्रत्येक सामाजिक प्रघटना का मौलिक कारण माना तथा व्यक्तिगत व्यवहारों तथा मनोवैज्ञानिक पक्ष की उपेक्षा की।